मसीह की देह

कलीसिया के चित्रण के लिए पवित्र शास्त्र में आत्मा की प्रेरणा से बहुत से संकेतों का इस्तेमाल किया गया है। उस संस्थान के बारे में हम अपनी अधिकतर जानकारी के लिए इन संकेतों पर ही निर्भर हैं। इनके बिना हम बेचारे (असहाय) से लगते हैं। कलीसिया को एक मानवीय देह के रूप में दिखाने के चयन से, लगता है कि आत्मा ने एक बहुत ही सरल परन्तु अधिक गहरे उदाहरण को चुना है। इस तुलना से तीन उत्कृष्ट सच्चाइयां मिलती हैं।

कलीसिया से मसीह का सम्बन्ध

कलीसिया से सम्बन्ध में, मसीह इसका सिर है। इफिसियों 1:22, 23 और कुलुस्सियों 1:18, 24 में इस रूपक का इस्तेमाल किया गया है। ये आयतें न केवल इस तथ्य पर ज़ोर देती हैं कि मसीह कलीसिया का सिर है, बल्कि पहले वाली आयतें यह भी बताती हैं कि वह सिर कब बना: जी उठने और महिमा पाने के बाद। यदि, जैसा कि बहुत से लोग दावा करते हैं, कलीसिया का अस्तित्व मसीह की मृत्यु से पहले था, तो यह एक ऐसी देह थी जिसका कोई सिर नहीं था। निश्चय ही, यह उन भ्रान्तिपूर्ण विचारों का खण्डन करता है जिनके अनुसार कलीसिया की स्थापना इब्राहीम के दिनों में या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने की थी। यह पद सिखाता है कि मसीह अपने जी उठने के बाद ही कलीसिया का सिर बना; और इसमें अच्छी तरह देखकर, हमें पता चलता है कि इसकी स्थापना उसके पुनरुत्थान के पचास दिन बाद अर्थात पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी (प्रेरितों 2)। यही कलीसिया का जन्म दिन था। उस दिन से मसीह अपनी इस देह पर शासन करने लगा था।

मसीह के सिर होने और शासक तथा राजा होने की बात अधिकार और प्रबन्ध की धारणा को बहुत ही अच्छे ढंग से समझाती है। इसमें सुझाव है कि उसके पास सारा अधिकार है, जैसा कि उसने मत्ती 28:18 में दावा किया था। सिर के रूप में, वह कलीसिया पर शासन करता है। उसकी सरकार का ढंग पूरी तरह से राजतन्त्र है।

इस राजतन्त्र का विशेष गुण इसकी सम्पूर्णता है। कलीसिया का सिर बुद्धि और प्रेम में सम्पूर्ण है अर्थात वह कोई गलती नहीं करता। सभी धार्मिक मामलों में हमें अधिकार के अन्तिम स्वर के रूप में उसकी ओर देखना चाहिए। इसके लिए हम कलीसिया, अपने विवेक, मूसा, या परम्परा से सुझाव नहीं ले सकते।

मैंने किसी व्यक्ति का एक लम्बा लेख पढ़ा था जिसमें उसने यह प्रमाणित करने का यत्न किया था कि कलीसिया का सिर पतरस है। वह यह प्रमाणित करने के लिए कि पतरस और उसके उत्तराधिकारी कलीसिया के सिर थे, बड़े विस्तार में चला गया। हम यह इन्कार नहीं करते कि कलीसिया के लिए सिर चाहिए और न ही यह कि इसका एक सिर है। परन्तु, हम मसीह की कलीसिया का सिर किसी को होने की बात का ज़ोरदार ढंग से इन्कार करते हैं। केवल मसीह ही इसका सिर है। उसने परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त अपने राजदूतों के द्वारा बात की है (2 कुरिन्थियों 5:20) और उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं हुआ।

इस ज्ञान से कि कलीसिया का सिर मसीह है प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग में कलीसिया का बहुत महत्व होना चाहिए। ऐसा संस्थान नगण्य नहीं हो सकता जिसका सिर मसीह हो। यह तथ्य कि वह इसका सिर है, कलीसिया के महत्व को दिखाता है। उस देह का अंग बनना कितने सम्मान की बात है जिसका सिर मसीह है!

भावना तथा बोध का केन्द्र सिर है। जो कुछ भी शरीर में किया जाता है वह वहां अर्थात सिर द्वारा महसूस किया जाता है। कलीसिया को सम्मान देकर हम इसके सिर को सम्मान देते हैं और कलीसिया का अपमान करके सिर का अपमान करते हैं। न्याय का दृश्य, मत्ती 25 के इस कथन के पहले भाग को प्रमाणित करता है। पृथ्वी पर मसीह के भाइयों की सेवा का अर्थ उसकी सेवा करना है। प्रेरितों 9:4 में शाऊल के साथ यीशु की बात पिछले भाग को प्रमाणित करती है कि कलीसिया को सताने का अर्थ मसीह को सताना ही है। आइए हम सावधान रहें कि कलीसिया की बात कैसे करते हैं और हम इसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं!

मसीही लोगों के साथ मसीह का सम्बन्ध

सम्भवत:, कलीसिया को छोड़ किसी भी विषय में इतनी गलतफहमी नहीं पाई जाती। कलीसिया से सम्बन्धित भ्रान्तिपूर्ण अधिकतर विचारों में इसे न समझना है।

आइए कलीसिया की परिभाषा ढूंढ़ते हैं। यह मसीह की देह है (इफिसियों 1:22, 23)। निश्चय ही, यह लोगों की एक देह है, परन्तु कौन से लोगों की? उद्धार पाए हुए लोगों (प्रेरितों 2:47) अर्थात नये नियम के मसीहियों की। इस प्रकार कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों से बनी देह है जिस पर मसीह राज्य करता है। कलीसिया की परिभाषा ही इसके महत्व पर प्रकाश डालती है।

कई लोग यह नहीं मानते कि कलीसिया बचाती है। वे सही हैं क्योंकि यह उद्धारकर्त्ता नहीं है; उद्धारकर्त्ता तो मसीह है और केवल वही बचा सकता है। वह किसे बचाता है? देह को (इफिसियों 5:23)।

कलीसिया के महत्व और इसके सदस्य बनने के बारे में भी गलतफहमी पाई जाती है। कलीसिया की अनिवार्यता को पौलुस के कथन में कि देह में ही मेल होता है, देखा जा सकता है (इफिसियों 2:16)। फिर, कलीसिया के बाहर तो, मनुष्य परमेश्वर से मेल नहीं कर सकता।

देह के बाहर कोई जीवन नहीं है। सिर से जुड़े रहने के लिए, देह से जुड़ना आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति देह से बाहर रहकर सिर से नहीं जुड़ सकता। हां, आत्मिक जीवन पाने के लिए कलीसिया में होना आवश्यक है। यह शिक्षा गलत है कि उद्धार पाने के लिए आपको कलीसिया में होने की आवश्यकता नहीं है।

मसीहियों के एक दूसरे के साथ सम्बन्ध

इफिसियों 4:16 में कलीसिया को एक मानवीय देह के रूप में दिखाया गया है जिसके बहुत से सदस्य हैं। इस रूपक में दिखाया गया है कि प्रत्येक सदस्य का महत्व है और उसे कुछ काम अवश्य करना चाहिए। जैसे मानवीय देह के बहुत से अंग होते हैं, हर अंग का अपना काम होता है और सब मिलकर देह के लिए ही काम करते हैं, उसी प्रकार हमें जो मसीह की देह से जुड़े हैं भिन्न-भिन्न कार्य दिए गए हैं, फिर भी हम उसी देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 12:25, 26)। प्रत्येक सदस्य को वहीं पर होना चाहिए जहां पर वह है, और प्रत्येक सदस्य पूरी देह के लिए उपयोगी है। हर किसी को एक दूसरे की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए हर एक को अपना ही काम पूरा करना चाहिए, न अपने आपको बड़ा दिखाकर और न दूसरों को तुच्छ जानकर।

देह के सदस्यों को एक दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्वक उसकी सम्भाल करनी चाहिए। जब एक को दुख होता है, तो सभी दुखी होते हैं। जब देह के एक अंग में विकार होता है, तो सारी देह ही परेशान होती है। इसे ठीक करने के लिए दूसरे सदस्यों की शक्ति की आवश्यकता होती है। जब एक भाई भटक जाता है, तो हम उसके बारे में उदासीन नहीं हो सकते। हमें उसके बारे में इस प्रकार से बात नहीं करनी चाहिए जिससे लगे कि उसका हमारे साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। सारी कलीसिया की सम्भाल, सुझाव व प्रार्थनाएं उस भटके हुए सदस्य पर लगी रहनी चाहिए। किसी सदस्य पर विपत्ति आने पर, उस दुखी सदस्य के लिए दूसरे सदस्यों की सहानुभूति आवश्यक है। इसी प्रकार, जब एक सदस्य आनन्द करता है, तो हम सभी को आनन्दित होना चाहिए। यह किसी भी प्रकार के द्वेष को असम्भव कर देता है। देह के किसी दूसरे सदस्य के अच्छे भविष्य या सफलता पर कोई अप्रसन्नता नहीं होनी चाहिए। क्या हम आत्माओं की निकटता, एक ही प्रकार की दिलचस्पी, स्नेह तथा मन की एकता का अनुभव करते हैं जिससे लगे कि हम एक ही देह के सदस्य हैं?

सारांश

मसीह के अपनी कलीसिया और इसके सदस्यों से सम्बन्धित तीन सबक उभर कर सामने आते हैं। यदि हम मसीह की देह अर्थात कलीसिया में हैं तो वह हमारा सिर और हमारे जीवनों का प्रभु है। उसमें एक होने के लिए हमें उसकी देह में होना आवश्यक है, और उस देह के सदस्यों में एकता व सहयोग होना आवश्यक है। मसीह हमारे ऊपर है! हम मसीह में हैं! हम एक दूसरे के अंग हैं! ये बातें उन लोगों में सत्य हैं जो सचमुच मसीह की देह में हैं।